केंचुआ खाद

केंचुआ खाद वह खाद है जो किसान आसानी से कम खर्च में तैयार कर सकते हैं, केंचुआ खाद को तैयार करने में केंचुओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है, केंचुआ सड़े गले पदार्थों में रहने वाले सूक्ष्म जीवाणु/बैक्टिरिया व मिट्टी का मिश्रण करके जमीन के अंदर अन्य परतों में फैलता है, इससे जमीन पोली हो जाती है था मिट्टी की निचली सतह तक हवा का आवागमन बढ़ जाता है साथ ही केंचुयें के पेट में जो रासायनिक क्रिया चलती है उससे जमीन में पाये जाने वाले नाईट्रोजन, फॉसफोरेस, पोटाश, कैल्शियम व अन्य सूक्ष्म तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है, यही कारण है कि केचुएं को किसान का मित्र कहा जाता है।

केंचुआ खाद में अन्य कार्बनिक खादों की अपेक्षा पोषक तत्वों की मात्रा अधिक पायी जाती है, इसमें 1.6 प्रतिशत नाइट्रोजन, 5 प्रतिशत फॉस्पोरस, व 0.8 प्रतिशत पोटास, 0.43 प्रतिशत कैल्शियम, 0.14 प्रतिशत मैग्निशियम एम.जी, तथा 175 प्रतिशत आयरन तथा 95.98 प्रतिशत मैग्निशयम एमएन, तथा 24.34 प्रतिशत जिंक पाया जाता है।

केंचुआ खाद बनाने के लिए जरूरी प्रदार्थ :

- बालू या दोमट मिट्टी ।
- गाय का गोबर
- जंगली अवशेष पौधों की टहनियाँ, लकड़ी का बुरादा
- सूखी पत्तियां, भूसा, छिलका, बगानों की पत्तियाँ (नीम की पत्तियों को छोड़कर) आदि।

केंचुआ खाद बानाने के लिए टंकी बनाने की जरूरत पड़ती है, यह टंकी ईंट से बनाई जा सकती है, यह टंकी 10 फुट लम्बी, 3 फुट चौड़ी तथा 2 फुट ऊंची हो सकती है।

केंचुआ खाद बनाने की विधि :

- जिस कचरे से खाद तैयार करना है उसमें से कांच, पत्थर, प्लास्टिक धातु के टुकड़े अलग करना जरूरी है।
- टंकी की निचली सतह पर 2 से 3 इंच की रेत या बजरी की परत बिछाएं।
- रेत की इस परत के ऊपर 6 इंच मिट्टी की परत बिछाई जाती है।
- इसके ऊपर पत्तियां, भूसा, छिलका की 2 इंच मोटी परत बिछायी जाती है।
- इसके ऊपर 2-3 इंच की पकी हुई गोबर खाद डाली जाए।

- इसके ऊपर 2000 से 2500 केंचुआ गोबर खाद की सतह पर फैला दिया जाता है।

- केंचुआ को डालने के उपरांत उसके ऊपर गोबर खाद पत्ति आदि की 6 से 8 इंच की परत बनाई जाती है।

- इसके ऊपर गोबर घोल के पानी का झाड़ू से छिड़काव आवश्यकतानुसार करते रहें। ताकि 40 से 45 प्रतिशत नमी बनी रहे, अधिक नमी/ गीलापन रहने से हवा अन्दर नहीं जायेगी, जिससे सूक्ष्म जीवाणु तथा केंचुए कार्य नहीं कर पायेंगे, कई बार अधिक नमी के कारण केंचुओं की मौत भी हो जाती है।

- सप्ताह में एक बार कचरा को ऊपर नीचे करना चाहिये, इस प्रकार इस प्रक्रिया को अपनाते रहने पर डेढ़ माह में केंचुआ खाद तैयार हो जाती है, यह चाय के पाउडर जैसी दिखती है तथा इसमें मिट्टी जैसे सोंधी गंध आती है।

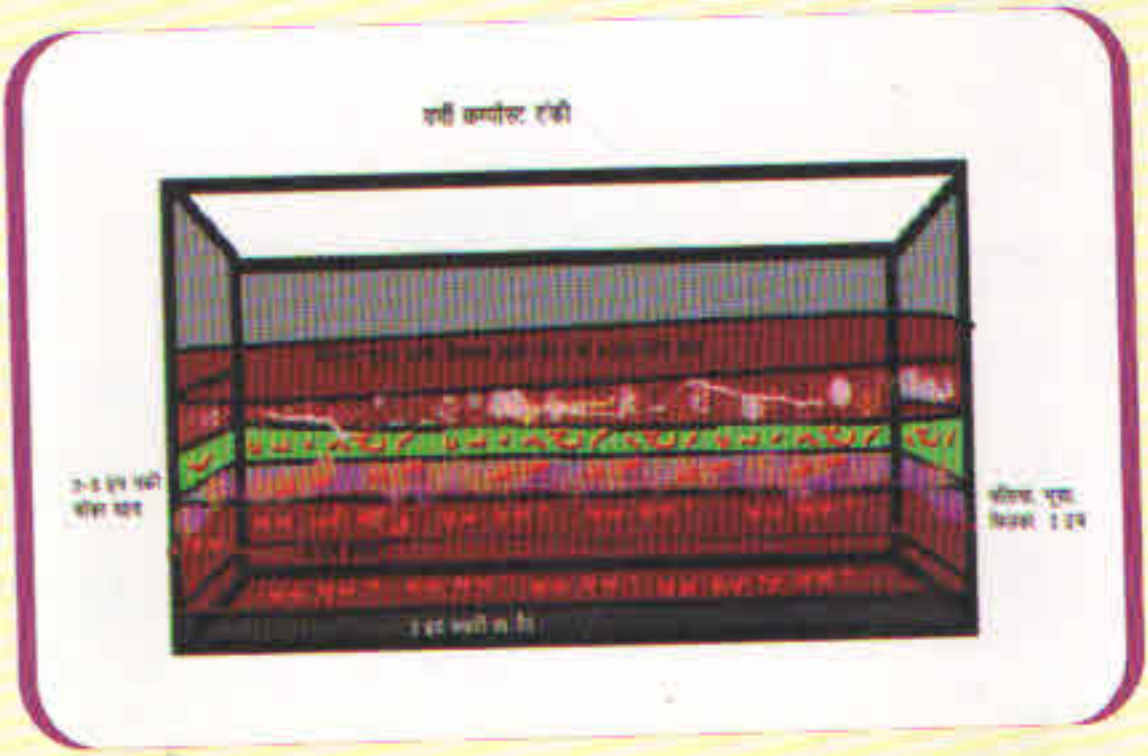

- खाद हाथ से अलग करें तथा खाद के छोटे-छोटे ढेर बना दें जिससे केंचुएं खाद की निचली सतह पर रह जायें।

- नर्सरी को तेज धूप एवं वर्षा से बचाना बहुत जरूरी होती है जिसके लिये घांस-फूस का शेड या छप्पर बनाया जा सकता है।

- तैयार हुई खाद को रेत छानने वाले छननी से छानकर उपयोग किया जा सकता है, केंचुआ खाद का भण्डारण करते समय हमेशा यह ध्यान रखें कि खाद को छायेंदार स्थान पर रखें क्योंकि धूप का सामना करने पर खाद की नमी चली जाती है जिससे खाद के पोषक तत्व खत्म हो जाते हैं।

केंचुआ खाद से लाभ :

(खेत के लिए)

- केंचुए से खेत की गुणवत्ता में सुधार होता है।
- खेत की पानी सोखने की क्षमता बढ़ती है।
- जमीन का तापमान बनायें रखने में सहायक है।
- जमीन से पानी का वाष्पीकरण कम होगा, जिससे सिंचाई हेतु अधिक पानी की जरूरत नहीं पड़ेगी।
- जमीन में उपयोगी जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि होती है।
- जमीन में कार्बनिक पदार्थ भरपूर मात्रा में होने से नाईट्रोजन, फॉसफोरस, पोटाश एवं अन्य पोषक तत्व छोटे पौधों को आसानी से जल्दी व भरपूर मात्रा में मिलते हैं।

किसान के लिये :

- जमीन की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि होती है।
- जमीन में सिंचाई (पानी देने) के अंतराल में वृद्धि होती है।
- रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से खेती की लागत में कमी आती है।
- केंचुआ खाद के उपयोग से फलों, सब्जियों एवं अनाजों के स्वाद, आकार, रंग एवं उत्पादन में बढ़ोत्तरी होती है।

  कम लागत में कम समय में अधिक मात्रा में खाद को तैयार किया जा सकता है।

पर्यावरण के लिये

- भूमि के जल स्तर में वृद्धि होगी।
- मिट्टी, खाद्य पदार्थों और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आयेगी।
- इस खाद के उपयोग से पर्यावरण पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पढ़ता।

केंचुआ खाद उत्पादन में ध्यान देने योग्य बातें

- खाद बनाये जा रहे पदार्थों में प्लास्टिक कांच एवं पत्थर आदि नहीं होना चाहिये।
- बेड पर ताजा गोबर नहीं डालना चाहिये, क्यों यह गरम होता है, इससे केंचुए मर जाते हैं।
- केंचुओं को मेंढक, सांप, चिड़िया, कौआ, छिपकली, एवं लाल चिंटियों से रक्षा करनी चाहिये।
- गोबर अधसड़ा एवं पर्याप्त नमीयुक्त ही उपयोग करें।

- बेंड में नमी व छाया रहना चाहिये साथ ही खाद का तापमान 18 से 30 डिग्री सेंटीग्रेड तक होना चाहिये।
- जमीन में केंचुआ खाद का उपयोग करने के बाद रासायनिक खाद व कीटनाशक दवा का उपयोग न करें।

WaterAid
सहयोग

कर्मदक्ष
CARM - DAKSH

क्रियान्वित **कर्मदक्ष**

ई-2 पारिजात कॉलोनी,
नेहरू नगर, बिलासपुर (छ.ग.) 07752-420798

क्षेत्रीय कार्यालय
रेस्ट हाऊस के सामने, चैतुरगढ़ रोड, पाली

खाद हेतु संपर्क करें -
महालक्ष्मी महिला स्व सहायता समूह
झोरकीपारा बतरा, पाली-कोरबा (छ.ग.)